बिन दीपक बिन मन्दिर सूना ,ना वस्तु का बेरा रे साधो भाई ,
ले दिवलो में घर घर जाती ,नही मिल्यो तेल उधारो रे साधो।

तो जोत तो अंदर जग रही ह ,सिर्फ मन्दिर यानी घर में तो रहना ह ।

पांचू इन्द्रिया वश में राखी जद में नाथ कवाया
।नाथ जी महा राज कहते है ।सच में रहना ,होश में रहना

।दीपक जलते ही अन्धेरा खत्म हो जाता ह ।वेसे ही परमात्मा मिलते ही भीतर भी जोत जलती रहती ।।

जय श्री नाथ जो की ।